Neolithic Culture

Dr. Dilip Kumar
Assistant Professor (Guest)
Dept. of Ancient Indian History & Archaeology,
Patna University, Patna
Paper – CC-XI, Sem. – III

भारत - पाकिस्तान क्षेत्र में मध्यपाषाणिक संस्कृति के बाद जिस नये संस्कृति का विकास हुआ, उसे नवपाषाणिक संस्कृति के नाम से जाना जाता है। नवपाषाण अंग्रेजी शब्द Neolithic का हिंदी रूपान्तरण है। अंग्रेजी का Neolithic शब्द ग्रीक भाषा के दो शब्दों के सम्मिश्रण से बना है यथा Neos और Lithos। Neos का शाब्दिक अर्थ New एवं lithos का शाब्दिक अर्थ Stone या पत्थर। दुसरे शब्दों में Neolithic का शाब्दिक अर्थ New stone या नवपाषाण।

नवपाषाण काल की संस्कृति इस बात की परिचायक है कि उस ज़माने में समाज में अनेक आर्थिक और प्रायोगिक परिवर्तन हुए ये परिवर्तन इतने दूरगामी परिणामों वाले थे कि अनेक विद्वानों ने इस चरण को नवपाषाण क्रांति कहकर पुकारा। हालाँकि नवपाषाण काल बहुत पहले 7000 B.C. में शुरू हुआ था लेकिन भारत में इस युग की जो बस्तियां पाई गई थी वे 5000 - 4000 B.C. से अधिक पुरानी नहीं है। इस युग के उपकरण की विशेषता यह थी कि मानव ने पत्थर को घिसकर उसपर पॉलिश करके उपकरण बनाना शुरू कर दिया। दुसरे शब्दों में कह सकते है कि ये टंकित, घर्षित एवं पॉलिसदार उपकरण थे।

नवपाषाण काल की आर्थिक परिभाषा के मूल तत्व है - खाद्य बनस्पतियों का कृषिकरण या खाद्य उत्पादन एवं पशुपालन। दुसरे शब्दों में कह सकते है कि वों भोजन का उत्पादन करने लगा था। गाय, बैल, सूअर, बकरी, भेड़ और कुत्ते पालने लगा था। इन सबसे उसे आत्मनिर्भर होने में काफी सहायता मिली, बाद में वह बर्तन भी बनाने लगा। जीवन की इस नई शैली में सामूहिक रूप से निश्चित स्थानों में बस्तियां बनाकर रहने लगा। उसका घुमंतू जीवन भोजन के तलाश में समाप्त हो गया और उसके तथा जमीन के टुकड़ो के बीच जिसे खेत कहा जाता है, एक नया सम्बन्ध स्थापित हुआ। इस सम्बन्ध ने उसका सम्पूर्ण जीवन बदल दिया, अब वह घुमंतू शिकारी नहीं रहा। छोटे - छोटे समूहों में इधर उधर घूमना बंद हो गया और उसने सामाजिक जीवन का विकास कर लिया। लेकिन वास्तविक नवपाषाणिक संस्कृति धातु रहित माना जाता है और जहाँ भी नवपाषाण स्तर पर धातु की सीमित मात्रा दिखाई दे उसे पुरातत्ववेता

Neolithic - Chacolithic स्तर की संज्ञा देते है । भारत में नवपाषाण काल की संस्कृतियों में हालाँकि बहुत से समानताएँ है फिर भी हरेक में स्थानीय, पर्यावरण परिवेश और विविध प्रकार के प्रभावों के कारण अपनी क्षेत्रीय विलक्षणताए भी है ।

भारत - पाकिस्तान के नवपाषाण कालीन संस्कृति के अवशेष भारत पाकिस्तान के उतर - पश्चिम भूभाग, उतर भूभाग, दक्षिण भूभाग, मध्यवर्ती भूभाग, पूर्वी भूभाग एवं उतर-पूर्वी भूभाग में पाये गये है । अतः भौगोलिक क्षेत्र के आधार पर इसका नामकरण किया गया है यथा (i) उतर पश्चिमी नवपाषाण संस्कृति (ii) उतरी नवपाषाण संस्कृति (iii) मध्यवर्ती नवपाषाण संस्कृति (iv) पूर्वी नवपाषाण संस्कृति (v) उतर पूर्वी नवपाषाण संस्कृति एवं (vi) दक्षिणी नवपाषाण संस्कृति । प्रत्येक क्षेत्र में दो या दो से अधिक उत्खनित स्थल है परन्तु दक्षिण भारत में एक दर्जन से अधिक उत्खनित स्थल है । इन पुरास्थलों से प्राप्त अवशेषों के आधार पर उस क्षेत्र के संस्कृति की विशेषताओं के बारे में जानकारी मिलती है । इन संस्कृतियो के एक साथ विकसित होने, समसामयिक होने तथा एक दुसरे से प्रभावित होने की संभावना बताने वाले अनेक सांस्कृतिक साक्ष्य भी देखे गए है ।

नवपाषाण काल की संस्कृतियों के अवशेष भारत में जहाँ - जहाँ मिले है, उनमें महत्वपूर्ण स्थलों के नाम है - कश्मीर में बुर्जहोम, गुर्फकराल तथा मार्तण्ड, दक्षिण में ब्रहमगिरी, संगनकल्लू, मस्की, नागार्जुनीकोंडा, उतनुर, पिकलिहल, टीनरसिंघपुर और तेक्काल्कोटा, उतर - पूर्वी क्षेत्र में देवजलिहेडिंग, पूर्वी क्षेत्र में चिरांद, बारूदी, ताराडीह, कुच्चाई, मध्य क्षेत्र में कोल्डीहवा, महगरा, चोपनीमांडो और पाकिस्तान क्षेत्र में स्थित किलेगुलमुहम्मद, दमसदात, मेहरगढ़ उल्लेखनीय है ।

(i) उतर पश्चिमी नवपाषाण संस्कृति - उतर पश्चिमी नवपाषाण संस्कृति का प्रसार बलूचिस्तान, स्वात तथा पाकिस्तान के उपरी सिन्धु घाटी के क्षेत्र में है। इस क्षेत्र के प्रमुख उत्खनित क्षेत्रों में क्वेटा नगर से 3 km उतर - पूरब की ओर स्थित किलेगुलमोहमम्द तथा बलूचिस्तान के क्षेत्र में ही स्थित बेलन नदी घाटी के किनारे मेहरगढ़ है । किलेगुलमोहमम्द स्थल पर उत्खनन के फलस्वरूप जो अवशेष प्राप्त हुए है उनके दो भाग किये गए है जिसमे प्रथम प्राक Pottery नवपाषाणिक संस्कृति तथा दूसरी pottery से सम्बंधित संस्कृति है । प्रथम काल में मिट्टी की ईटों तथा कड़ी सनी मिट्टी के घर बनने लगे थे । यह हड्डियों से बने औजारों का व्यवहार किया करते थे तथा नुकीली प्रस्तर उपकरणों में टंकित, घर्षित एवं पॉलिसदार उपकरण का व्यवहार करते थे । इसके आलावे लघु पाषाण उपकरण यथा Blade, Scraper आदि का व्यवहार करते थे । इन स्थलों से एक टुटा हुआ लोढ़ा प्राप्त हुआ था। यहाँ के निवासी भेड़, बकरी, गाय इत्यादि पालते

थे, इन जानवरों के अस्थि अवशेष उनके प्रमाण है । इस काल में आनाज के साक्ष्य यहाँ से नहीं मिले है । द्वितीय काल में pottery का निर्माण प्रारंभ किया गया था । मिट्टी के बर्तन रुक्ष है, उनपर लकड़ी के छाप दिखाई पड़ते है । प्रथम काल के उपरी धरातल पर मिले चूल्हे से उपलब्ध कार्बन सैंपल के आधार पर इसकी तिथि 3500 या 3600 B.C. निर्धारित की गई है ।

दूसरा महत्वपूर्ण स्थल मेहरगढ़ है जो क्वेटा से दक्षिण में बेलन नदी के किनारे स्थित है। इस स्थल पर उत्खनन के फलस्वरूप 11 मीटर मोटाई का सांस्कृतिक जमाव प्रकाश में आया जिसे 7 कालों में विभाजित किया गया । इसमें प्रथम दो कालखंड नवपाषाणयुगीन है जिसमें प्रथम प्राक pottery (Aceramic) Neolithic तथा दूसरा seramic Neolithic यानि with pottery नवपाषाणिक संस्कृति है । दुसरे कालखंड के तीन उपभाग है यथा 2a, 2b, 2c । मेहरगढ़ के प्रथम कालखंड में मृदभांड का अस्तित्व नहीं है, इस कालखंड से प्राप्त अवशेषों में मुख्य है कच्ची ईटों के बने आयताकार घर, शवाधान, गोलाकार चूल्हे, लघु पाषाण उपकरण, पॉलिसदार कुल्हाड़ी, मिट्टी के बने मानव एवं पशु आकृति, गेहूँ एवं जौ के साक्ष्य अधिक मात्रा में मिले, मवेशी की हड्डियाँ यथा गाय, बैल, भेड़ आदि । प्रथम काल की तिथि कार्बन - 14 विधि के अनुसार 5100 B.C. निर्धारित की गयी है । द्वितीय काल से seramic या सभांडिय (बर्तन) का साथ मिलना नवपाषाणिक संस्कृति की मुख्य विशेषता है। बृहत्तर आयताकार मकानों के अवशेष, लघु पाषाण उपकरण, हड्डी के बने उपकरण, गेहूँ और जौ के साक्ष्य भी मिले है। गाय, बैल, भेड़, बकरी आदि की हड्डियाँ, मिट्टी की बनी मानवाकृतियाँ, तांबे की बनी अंगूठी, तांबे एवं फिरोजा के मनके तथा मृदभांड में हस्तनिर्मित तथा चाक पर निर्मित बर्तन के नमूने उल्लेखनीय है जिसपर ज्ययामितीय आकारों का अलंकरण मिलता है इस काल की तिथि 5000 B.C. निर्धारित की गयी है ।

(ii) उतरी नवपाषाण संस्कृति - उतरी नवपाषाण संस्कृति के प्रमाण काश्मीर में स्थित बुर्जहोम तथा गुर्फकराल आदि स्थलों से प्राप्त हुए है बुर्जहोम से तीन काल के अवशेष मिले। बुर्जहोम का पहला कालखंड नवपाषाण युगीन है जिसके दो उपखण्ड या चरण है । प्रथम चरण में हस्तनिर्मित मृदभांड तथा हड्डियों एवं प्रस्तर के उपकरण उपलब्ध हुए है। हड्डी के बने उपकरणों में कांटे, आरियाँ, सुइयां और बर्छियां आदि शामिल है । प्रस्तुत उपकरणों में कुल्हाड़ी, बसूला, छेनी आदि का उल्लेख किया जा सकता है जो समतलीकृत और घर्षित है । एक तरह का चौकोर प्रस्तर चाकू मिला है जिसका प्रयोग शायद फसल काटने में होता होगा । यहाँ के निवासी अंडाकार या वृताकार गर्भगृहों में रहते तहर जिसमे उतरने के लिए सीढियाँ और दीवारों में ताखें बनी है । प्रवेश द्वार के

बाहर चूल्हे और चारो ओर स्तम्भ गर्त है। बुर्जहोम के द्वितीय चरण में मिट्टी और कच्ची ईटों के घर, चाक निर्मित मृदभांड तथा तांबे का सीमित प्रयोग देखने को मिलता है। हड्डी तथा प्रस्तर उपकरण का प्रचलन पहले चरण की भांति ही देखा गया है, लेकिन अनेक मानवीय शवाधानों से प्राथमिक और द्वितीयक दोनों प्रकार के शवाधान के संकेत मिलता है। प्राथमिक शवाधान में शव को सीधे ही कब्र में दफना देते थे और द्वितीयक शवाधान में पहले शव को कुछ समय के लिए खुला रखते थे और बाद में अस्थियाँ इकट्ठी करके कब्र में दफना दिया जाता था। ये शवाधान अक्सर कुतों के साथ देखने को मिलते है, इसके आलावे कुते, भेड़िये और जंगली बकरी जैसे पशुओं के शवाधान मिले है। एक शिलापट्ट पर शिकार का दृश्य उत्कीर्ण है। कार्बन - 14 तिथि के अनुसार प्रथम कालखंड को 2375 B.C. - 1500 B.C. के बीच रखा जा सकता है। गुर्फकराल में भी इसी प्रकार के प्रमाण मिले है, यद्धपि यहाँ से कृषिकरण के स्पष्ट साक्ष्य मिले है।

(iii) मध्यवर्ती नवपाषाण संस्कृति - मध्यवर्ती नवपाषाणिक संस्कृति का प्रसार क्षेत्र गंगा घाटी के दक्षिण में स्थित कोल्डीहवा और महगरा है। उतर प्रदेश की बेलन घाटी में देवघाट के निकट यह स्थित है। कोल्डीहवा स्थल से वन्य और कृषिजन्य दोनों प्रकार के चावल मिलने का विवरण प्राप्त हुआ है जो 5000 B.C. का माना गया है। एक ही स्तर पर वन्य तथा कृषिजन्य चावल की उपस्थिति से यह संकेत मिलता है की इस क्षेत्र में चावल की खेती का सूत्रपात हुआ। महगरा में गोलाकार झोपड़ियों के प्रमाण मिले है। झोपड़ियों के फर्श पर बैल, हिरण, मछली, कछुए आदि की हड्डियाँ मिली है। हड्डी के बने उपकरण में point प्रमुख है। प्रस्तर उपकरणों में घर्षित एवं पॉलिसदार कुल्हाड़ियाँ मिली है। इसके साथ लोढे, लघु पाषाण उपकरण आदि मिले है। छिद्रयुक्त सीप के आभूषण, मिट्टी के बने मनके आदि का उल्लेख किया जा सकता है। इस स्थल से प्राप्त हस्तनिर्मित मिट्टी के बर्तनों को चार भागों में विभाजित किया गया है - (a) Burnished Red Ware, (b) Burnished Black Ware, (c) Rusticated ware और (d) Corded ware।

corded ware के सम्बन्ध में कहा जा सकता है की इस प्रकार के बर्तन को कछुए की हड्डी से पीटकर बनाया जाता था। उनसे पीटने पर corded के समान ही निशान पड़ते है। हस्त निर्मित pottery में धान की भूसी को सालन के रूप में प्रयोग किया गया है। कार्बन - 14 के अनुसार इस क्षेत्र के नवपाषाणिक संस्कृति को 5440 $^{+}_{-}$ 240 एवं 4530 $^{+}_{-}$ 185 के बीच रखा जा सकता है।

(iv) पूर्वी नवपाषाण संस्कृति - भारत के पूर्वी नवपाषाणिक संस्कृति का प्रसार क्षेत्र बिहार, पश्चिम बंगाल एवं उड़ीसा का क्षेत्र है। इस क्षेत्र के उत्खनित स्थलों में मुख्य है बिहार के सारण जिले में

स्थित चिरांद, बोधगया के समीप स्थित तारडीह, सासाराम के निकट स्थित सेनुआर, सिंहभूम जिले स्थित Barudhi तथा उड़ीसा प्रदेश में स्थित कुच्चाई स्थल है । इन उत्खनित स्थलों में सबसे प्रमुख चिरांद है । बुर्जहोम के बाद चिरांद एक ऐसा स्थल है जहाँ हड्डी और मृगश्रृंग के बने अनेक प्रकार के औजार प्राप्त हुए है तथा कुल्हाड़ियाँ, सुइयां, छिद्रक, point, arrow या भाले, छड को सीधा करने वाला औजार, पुच्छल एवं छिद्र युक्त वानाग्र आदि। सिलवटे और पत्थर के गोले के आलावे पत्थर की घर्षित एवं पॉलिसदार कुल्हाड़ियाँ भी पाई गई है, इसके साथ लघु पाषाण उपकरण भी मिले है । उपकरणों में मुख्य है parallel side blade, points, lunets आदि । इसके अतिरिक्त हलके रत्नों के बने मानकें, मिट्टी की बनी चूड़ियाँ एवं पशु पक्षी एवं नाग की मृण्मूर्तियों का उल्लेख किया जा सकता है इस युग के लोग बांस बल्ले का आधार बनाकर गोलाकार झोपड़ी में निवास करते थे । इन लोगों को अन्न की खेती के बारे में थोरी जानकारी अवश्य थी क्योंकि अवशेषों में गेहूँ, मुंग, मसूर और धान की भूसी के प्रमाण मिले है । पशुओं की हड्डियों में जंगली तथा पालतू जानवरों की हड्डियों की पहचान की गयी है । इस युग में बर्तन भी अच्छे बने हुए पाए गए है। बर्तनों में चार प्रमुख प्रकार है - Red ware, Burnished Red ware, Grey ware, Black & Red ware । इसमें कुछ हस्त निर्मित नमूने भी है। महत्वपूर्ण बात यह है कि terracotta शैली में बने सॉप की मूर्तियाँ भी पाई गयी है जो नागपंथ के बारे में एक तरह से प्राथमिक सूचना देता है । इस स्थल के प्रथम काल की तिथि C-14 विधि के अनुसार 1755 B.C. निर्धारित की गई है, यद्धपि इस संस्कृति का प्रारंभ 2000 B.C. में हुआ होगा ।

(v) उतर पूर्वी नवपाषाण संस्कृति - पूर्वोत्तर क्षेत्र की नवपाषाणिक संस्कृति का मुख्य क्षेत्र असम का भूभाग है जो अब तक सात राज्यों में विभक्त है । इस क्षेत्र का प्रमुख उत्खनित स्थल उतरी कच्छा पर्वतीय प्रदेश में स्थित देवजलिहेडिंग है। इस स्थल के छोटे से उत्खनन में घर्षित एवं पॉलिसदार कुल्हाड़ियाँ एवं मिट्टी के बर्तन प्राप्त हुए है। लघु पाषाण उपकरण तथा हड्डी के बने उपकरण इस स्थल से नहीं मिला है । गोल एवं पॉलिसदार कुल्हाड़ियाँ के मुठ चौरी और किनारे गोल और धारीदार है । असम में जो नवपाषाण कालीन संस्कृतियों का नमूना पाया गया है वो देश के शेष भागो से प्राप्त इस युग के अवशेषों से भिन्न लगता है । खुदाई में पत्थर की कुल्हाड़ियाँ के अनगिनत मिट्टी के बर्तन के टुकड़े मिले है जो हस्त निर्मित है । बर्तनों के मुख्य प्रकार है - लाल एवं भूरे रंग के बर्तन जिस पर डोरानुमा डिजाईन बनाये जाते थे। नवपाषाण कालीन मानव मिट्टी की दिवारों से बने घरों में रहता था । दुर्भाग्य की बात है कि इस खुदाई में

उनलोगों की बस्तियों के ढांचे के बारे में कोई सुचना नहीं मिली है प्रो. सांकलिया असम की इस नवपाषाणकालीन संस्कृति को 4000 - 2000 B.C. की मानते है ।

(vi) दक्षिणी नवपाषाण संस्कृति - दक्षिणी नवपाषाणिक संस्कृति का प्रसार क्षेत्र आधुनिक कर्नाटक, आंध्र प्रदेश तथा तमिलनाडु के कुछ हिस्से है । इस क्षेत्र में अनेक उत्खनित स्थल है यथा ब्रह्मगिरी, मस्की, पिकलिहल, उत्नूर, संगनकल्लू, कोडेकल, टीनरसिंहपुर, नागार्जुनीकोंडा । कुछ विद्वानों ने इस संस्कृति को एक ही संस्कृति का प्रसार न मानकर कुछ विभाजन किये है। यद्धपि कुछ विवादों को छोड़कर समग्रता में यह एक ही संस्कृति प्रतीत होती है, परन्तु pottery की तुलनात्मक अध्ययन के आधार पर इस संस्कृति को दो कालों में विभाजित किया जाता है । इसमें प्रथम कालखंड उत्नूर, पिकलीहल का निम्नतम स्तर, मस्की - I, ब्रह्मगिरी - IA का निम्न भाग तथा नागार्जुनीकोंडा में प्रदर्शित है जिसे प्रारंभिक नवपाषाण कहा गया है । इस काल से सम्बद्ध लोग ग्रेनाइट पहाड़ियों, इसकी समतल वेदिकाओं के मध्य स्थित समतल भूमि पर अपना आवास बनाते थे । इस काल के और उपकरणों में मुख्य है - घर्षित एवं पॉलिसदार कुल्हाड़ियाँ, लघु पाषाण उपकरण, हस्तनिर्मित बर्तन, गाय, बैल, भेड़, बकरी ले पलने एवं उनके हड्डी के उपकरण सील - लोढे का उपयोग तथा धातु का अभाव। राख के ढेर या भस्म टीले भी इस काल के है । pottery में पीलापन लिए भूरा बर्तन, Black ware, Red ware प्रमुख है। पके हुए बर्तन पर लाल रंग का चित्रण है । द्वितीय काल में लकड़ी के बने गोलाकार झोपड़ियों तथा फर्शों के प्रमाण, चक पर बने बर्तनों की बढती संख्या, धातु के प्रयोग आदि के साक्ष्य मिले है । इके अतिरिक्त मृदभांड एवं पॉलिसदार उद्दयोग में प्रयाप्त विविधता देखने को मिलती है ।